संस्कृत शिक्षण विधियाँ

पाठ्य-पुस्तक

- पाठ्य पुस्तक से अभिप्राय उस पुस्तक से है जो शैक्षिणिक संस्थान द्वारा किसी कक्षा के लिए या किसी विशेष कोर्स के लिए पढ़ाई हेतु निर्धारित की गई, ऐसी पुस्तक जिसमें पाठ्यक्रम के अनुसार विषयों तथा जानकारी को छापा गया हो, पाठ्य पुस्तक कहलाती है। इन पुस्तकों के आधार पर परीक्षा करवाई जाती है, जिसमें उतीर्ण होने के पश्चात ही विद्यार्थी को अगली कक्षा में भेजा जाता है।

- पाठ्य पुस्तकों का निर्धारण परीक्षा समिति द्वारा जांच कर ही किया जाता है तथा अधिकृत प्रकाशकों को ही इन पुस्तकों के प्रकाशन का कार्यभार सौंपा जाता है।

- विद्यार्थी अन्य पुस्तकों से मदद तो ले सकते हैं परन्तु उन्हें पाठ्य पुस्तक में दिए गए पाठ्यक्रम के आधार पर ही पढ़ाई करनी होती है।

पाठ्य-पुस्तक

- ***पाठ्य पुस्तक शब्द का प्रयायवाची हैः अध्ययन पुस्तक।***
- *पाठ्य पुस्तक को **अंग्रेजी में टेक्स्ट बुक** कहा जाता है।*
- *पाठ्यपुस्तक सर्वाधिक सुलभ शिक्षण साधन है, हमारी संपूर्ण शिक्षण व्यवस्था पाठ्यपुस्तक पर ही आधारित है।*

पाठ्य-पुस्तक का महत्त्व

- पाठ्य-पुस्तक कक्षा, विद्यार्थी एवं शिक्षक सभी के लिए उपयोगी है तथा एक मार्गदर्शक का कार्य करती है ।
- मनोरंजन, आत्मविश्वास, भाषा पर अधिकार तथा स्वाध्या , पाठ्य - पुस्तक के द्वारा ही सम्भव है ।
- पाठ्य-पुस्तक प्राप्त ज्ञान के स्थायीकरण के लिए अत्यन्त आवश्यक है ।
- पाठ्य-पुस्तक द्वारा गृहकार्य की समुचित व्यवस्था होती है ।
- पाठ्य-पुस्तक से पाठ को पढ़ने में सहायता मिलती है ।
- पाठ्य-पुस्तक से सूचनाओं का एक ही स्थान में संग्रह होता है ।
- पाठ्य-पुस्तक ज्ञान प्राप्ति का सशक्त साधन है ।

पाठ्य-पुस्तक के गुण -

- *यह आवश्यक है कि विद्यार्थी कक्षा में बतायी गयी बात को घर पर जाकर पुनरावृत्ति कर लें , पुनरावृत्ति का कार्य* ***बिना पाठ्य पुस्तक के असम्भव*** *है ।*
- *पाठ्य-पुस्तक के द्वारा विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार मानसिक विकास करता है ।*
- *विद्यार्थियों को कम मूल्य पर सभी आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण तथ्य एवं सूचनाएँ एक ही पुस्तक में मिल जाती हैं।*
- *सभी शिक्षक मौखिक शिक्षण में निपुण नहीं हो सकते ।*
- *सामान्य बुद्धि के शिक्षक के लिए पाठ्य - पुस्तक की सहायता लेना बहुत ही आवश्यक है ।*
- *मौन पठन का अभ्यास भी पाठ्य - पुस्तकों द्वारा ही होता है ।*

पाठ्य-पुस्तक के दोष -

1. पाठ्य - पुस्तकें पढ़कर विद्यार्थी अपना निर्णय निर्धारित करने में असमर्थ रहते हैं ।

2. सभी लेखकों को पाठ्य - पुस्तक में विषय , पाठ्यक्रम के अनुसार निर्धारित करना पड़ता है, जिससे विद्यार्थियों की रुचि की उपेक्षा होती है ।

3 . पाठ्य - पुस्तकों के द्वारा विद्यार्थी जीवन की विभिन्न समस्याओं को जानने की क्षमता अपने अन्दर उत्पन्न नहीं कर पाते हैं ।

4. आधुनिक पाठ्य-पुस्तकें विद्यार्थियों के ज्ञान विस्तार के लिए न लिखी जाकर व्यापारिक दृष्टि से लिखी जाती हैं । उनमें सस्ता कागज दिया जाता है तथा छपाई भी विद्यार्थियों की मानसिक आयु के अनुरूप नहीं होती है, तब पाठ्य - पुस्तक व्यापारिक बन जाता है

पाठ्य-पुस्तक की उपयोगिता -

1. पाठ्य-पुस्तक अध्यापक एवं छात्र दोनों का समय बचाती है ।
2. पाठ्य - पुस्तकों के माध्यम से छात्र घर पर भी अध्ययन कर सकते हैं और गृहकार्य करने में भी वे सहायता प्राप्त कर सकते हैं ।
3. पाठ्य - पुस्तकों की सहायता से एक साथ बहुत से छात्रों को पढ़ाया जा सकता है ।
4. पाठ्य - पुस्तकें अध्यापक को कक्षा में आने से पूर्व पाठ की तैयारी करने का अवसर देती हैं ।
5. प्रत्येक अध्यापक मौखिक शिक्षण में निपुण नहीं हो सकता । सामान्य बुद्धि के अध्यापक के लिए पाठ्य - पुस्तकों का सहयोग आवश्यक होता है ।
6. मौन अध्ययन का अभ्यास पाठ्य - पुस्तकों द्वारा ही कराया जा सकता है ।

पाठ्य-पुस्तक के चयन के लिए सावधानियाँ

I. पुस्तक का लेखक – पाठ्य-पुस्तक के चयन में सबसे पहले यह देखना चाहिए कि पुस्तक का लेखक योग्य, अनुभवी तथा उस विषय पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है अथवा नहीं । कभी - कभी जूनियर कक्षा के विद्यार्थियों के लिए ऐसी पुस्तकों को लिख देते हैं जो कि शिक्षा मनोविज्ञान से पूरी तरह अपरिचित होते हैं । इसलिए पुस्तक लेखक को केवल विज्ञान ही नहीं , बल्कि शिक्षा मनोविज्ञान से भी परिचित होना चाहिए ।

2. पाठ्य वस्तु की जाँच -

I. पाठ्य - पुस्तक में जो कुछ भी विषय रखा जाए उसका व्यक्ति के जीवन की विभिन्न क्रियाओं से सम्बन्ध होना चाहिए ।

II. पाठ्य - वस्तु सरल तथा विभिन्न रुचियों वाली हो । किसी एक बात पर अथवा सिद्धान्त पर आवश्यकता से अधिक जोर देना उचित नहीं है । पाठ्य - पुस्तकों में विभिन्न रुचियों को सम्मिलित करना चाहिए ।

III. पाठ्य - वस्तु की व्यवस्था इस प्रकार करनी चाहिए कि पाठों एवं प्रकरणों का परस्पर सम्बन्ध न टूटे ।

(iv) पाठ्य-पुस्तक कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो यदि वह सुव्यवस्थित नहीं होगी तो उसका सरलतापूर्वक पढ़ना तथा समझना कठिन होगा । इसलिए सामग्री को पाठों इकाइयों तथा सोपानों में विभाजित कर लेना चाहिए ।

(v) पाठ्य-वस्तु में विषयों को इस प्रकार रखा जाए कि विद्यार्थियों का नैतिक चारित्रिक विकास हो ।

(vi) पाठ्य - पुस्तक में पाठ्य सामग्री छात्रों की योग्यता तथा मानसिक आयु के अनुसार ही निर्धारित की जानी चाहिए ।

- ***विषय वस्तु*** *- विषय वस्तु स्तर के अनुसार विभिन्न विषयों से संबंधित प्रकरणों के समुचित क्रम युक्त होनी चाहिए। पाठों का क्रम सरल से कठिन की ओर होना चाहिए, विषय वस्तु का अनुपात या मात्रा इतनी हो कि शिक्षण सत्र में आसानी से पूरी हो जाए।*
- *पाठ्य पुस्तक में* ***गद्य-पद्य, नाटक, कथा*** *आदि सभी विषयों के पाठों का संकलन उचित अनुपात में होना चाहिए।*
- *पाठ्यपुस्तक की भाषा स्पष्ट शुद्ध व सुबोध हो। नवीन शब्दों का परिचय समाहित हो।*
- ***पाठ्यपुस्तक की लेखन शैली*** *अनुकूल होनी चाहिए, उच्च स्तर पर वर्णनात्मक या भाव प्रधान शैली तथा निम्न स्तर पर कथात्मक या संवादात्मक शैली होनी चाहिए, विभिन्न शैलियों का यथाक्रम संतुलित प्रयोग के साथ ही विविधता होनी चाहिए।*
- ***पुस्तक की भीतरी सजावट*** *- पुस्तक की भीतरी सजावट का विशेष ध्यान रखना चाहिए । मुख्य एवं कठिन तथ्यों को सरल तथा स्पष्ट बनाने के लिए चित्रों तथा उदाहरणों का आवश्यकता के अनुसार प्रयोग किया जाना चाहिए । छोटी कक्षा के छात्रों के लिए पुस्तकों में रंगीन आकर्षक चित्रों का संकलन होना चाहिए ।*
- ***पुस्तक की छपाई*** *– पाठ्य-पुस्तकों का मुद्रण छात्रों की आयु के अनुसार किया जाना चाहिए । छोटी कक्षा के छात्रों के लिए निर्धारित की जाने वाली पुस्तकों का मुद्रण ठीक होना चाहिए ।*